Introduction

भूमिका

कुमाऊँनी लोककथाओं का सांस्कृतिक अध्ययन

मेरी अभिरुचि, मेरे विषय की रुपरेखा को मानो विभिन्न आयाम से वशीभूत कर रहे थे। जब मैं एम. ए. हिन्दी की छात्रा थी उस वक्त गुजरात की संस्कृति का मुझ पर गहरा प्रभाव पडा। किन्तु मूलतः कुमाऊँनी क्षेत्र से मेरा अत्यधिक जुड़ाव होने के कारण मेरी रुचि की प्रतिछाया में कुमाऊँनी सांस्कृतिक ने अपना अलग और नीजि स्थायी तौर पर अपना स्थान केन्द्रित कर लिया था। संस्कृति के विभिन्न आयामों में कुमाऊँनी सांस्कृतिक का अध्ययन करना, उसके विषय में लिखना, शोध करना, जैसे मेरी आन्तरिक अनुभूतियों के दायरों में अपना स्थान बनाते चले गये। जैसा कि किसी क्षेत्र विशेष परम्परा का प्रारूप अगर परिलक्षित करना हो तो, उसके विषयवस्तु की गरिमा का वर्चस्व अपने मानसिक पटल पर केन्द्रित करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। ठीक उसी तरह सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का अवलोकन, कुमाऊँनी क्षेत्र के प्रांगण में निम्न स्वरुपों द्वारा दर्शाने की चेष्टा की गई है।

कुमाऊँ लोककथा संस्कृति के अंतर्गत मानव समूह, सौन्दर्यभिरुचि, उत्कृष्ट वैचारिक प्रक्रिया, आचारगत, पवित्रता, कलात्मक, और सामूहिक अभिव्यक्ति ही मानो लोककथाओं की जननी है।

कुमाऊँनी लोककथाओं की अपनी बोली, अपनी भाषा, अपना गीत, अपनी नीजि विशिष्टताओं को परिलक्षित किया गया है। धर्म, दर्शन, साहित्य, शिल्प, कला – संस्कार, अनुष्ठान, साहित्य, कला, लोकविश्वास आदि के रुपों को लोकसंस्कृति के विविध आयाम में दृष्टिगत किया गया है। हिमालय क्षेत्र के विशाल प्रांगण में लोक संस्कृति भारतीय संस्कृति का एक लघु संस्करण है। मध्य हिमालय से लेकर पूर्वी

खंड कुमाऊँ की लोक संस्कृति खंड 'गढ़वाल' नाम से जानी जाती है। पूर्वी और पश्चिमी कुमाऊँनी संस्कृति के बहुआयामी रुपों को भी यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

चूँकि, कुमाऊँनी संस्कृति की अपनी एक पहचान है। अपनी भाषा और बोली है, जिसमें विशेष रुप से लोकगीतों, लोककथाओं, नृत्यों, सामाजिक रीति, नीतियों, की अभिव्यक्ति को प्रतिपारित किया गया है। कुमाऊँ का परिचय किंवदंती कथाओं पर आधारित किया गया है। भौगोलिक विस्तार का प्रभाव, सीमा क्षेत्र की विशेषताओं को सहजरुप से चित्रित किया गया है। वहीं दूसरी तरफ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के प्रांगण के विषय पर पौराणिक युग व महाकाव्यों का काल, वैदिक काल, कुमाऊँनी भाषा क्षेत्र, कुमाऊँनी का उद्‌भव एवं विकास कुमाऊँनी की विविध बोलियाँ, कुमाऊँनी रचनाकार और कृतियों का विश्लेषण किया है। जिसमें जन समुदाय की प्रतीति को ध्वनित करते हुए उनकी भावनाओं, विचारों, परम्पराओं एवं मान्यताओं की अवधारणाओं को रीति – नीतियाँ, वाणी – विलास लोक साहित्य की निश्चल एवं अकृत्रिम अभिव्यक्ति आवेग – उद्वेग, हर्ष – विषाद आदि। जिनमें युग की सामान्य चेतना की प्रत्येक गति को दर्शाया गया है। लोक साहित्य का महत्व, जिसमें समाज की अमूल्य और अनुपम निधियाँ सामायिक बोध की एक – एक अवस्था, सामूहिक विजय – पराजय प्रकृति की गतिविधि, बलि – पूजा, टोने – टोटके, आशा – निराशा का चिंतन लोक मनोविज्ञान आदि के प्रतिबिम्ब को लोकसाहित्य के माध्यम से दृष्टिगोचर किया गया है। लोकसाहित्य का सांस्कृतिक ऐतिहासिक, भौगोलिक सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, साहित्यिक, सांगीतिक, लोकाचार, लोकशिक्षा यह सभी अमूल्य निधियों को श्रृंखलात्मक विवरण दिया गया है।

भारतीय लोककथाओं की परम्परा जिनमें कथा साहित्य, वैदिक संहिताएँ, ब्राह्मण ग्रंथ, उपनिषद्, पुराण ग्रंथों की कथाएँ, बृहत्कथा मंजरी, कथा सतिसागर, पंचतंत्र, हितोपदेश, बेतालपंचविंशतिका, सिंहासन्द्वात्रिशिका तथा जातक कथाएँ, भारतीय कथा साहित्य के अमर ग्रंथ और इसके साथ ही लोककथाओं का वर्गीकरण। जिसमें पशु – पक्षी संबंधी कथाएँ, व्रतपरक कथाएँ, भूतप्रेत संबंधी कथाएँ, प्रकृति परक कथाएँ, नीति – परक कथाएँ, धर्म संबंधी कथाएँ, कारणमूलक कथाएँ, बाल – कथाएँ, और हास्य – मनोरंजनमूलक कथाएँ, साथ ही साथ लोकजीवन के हास्य, विषाद, करुणा, और अभाव की विशेषता को प्रतिपादित किया गया।

लोक की अभिव्यक्ति, लोकवाणी के विभिन्न रुप, लोक की उक्ति, जिनमें मानव जीवन की सम्पत्ति, उनका रस भंडार, सामाजिक कहावतें, ऐतिहासिक कहावतें, धार्मिक कहावतें, नीति और उपदेश संबंधी कहावतें, जातिय विशेषताओं से संबंधी कहावतें, हास्य – व्यंग्य संबंधी कहावतें, कृषि संबंधी कहावतें, प्रकीर्ण कहावतें, आदि को समाहित किया गया है। मुहावरों द्वारा की गई अभिव्यक्ति, ज़िसमें मुहावरों का प्रयोग, कथन में सरलता, स्पष्टता, चुस्ती, व्यावहारिकता तथा चमत्कार का समावेश किया गया है। लोक के द्वारा की गई अभिव्यक्तियों और भाषा में सजीवता एवं प्रभावोत्पादकता का भी समावेश किया गया है। कुमाऊँनी लोक कथाओं के सांस्कृतिक अध्ययन की विशिष्ट विविधता एवं संस्कृति के साक्षात्कार की अनिवार्यता को डॉ. ओमप्रकाश यादव ने अपना विशिष्ट योगदान देकर मेरे इस शोध प्रबंध कार्य के लिए मुझे प्रोत्साहित किया।

डॉ. ओमप्रकाश यादव, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के रीडर है, उन्होंने मुझे प्रोत्साहित कर अपना अमूल्य योगदान देते हुए कुमाऊँनी

लोककथाओं, संस्कृति अध्ययन के विषय में पी.एच.डी. करने हेतु अपनी स्वीकृति दी। मैं डॉ. ओमप्रकाश यादव के निर्देशन में शोध प्रबंध लेखन का कार्य कर रही हूँ। जिसमें डॉ. विष्णुविराट जी का भी लगातार निर्देशन और उनका अमूल्य सहयोग प्राप्त कर आज उन्हीं के प्रोत्साहन एवं डॉ. ओमप्रकाश यादव जी के कुशल निर्देशन से यह शोध प्रबंध लेखन कार्य को पूर्ण किया जा सका है।

अध्ययन की सुविधा के लिए प्रस्तुत छः अध्यायों में इसे विभक्त किया गया है।

प्रथम अध्याय में भारतीय संस्कृति के बारे में चर्चा की गई है, तथा उसके विकास, फलक और अंगों की विस्तृत रुप से चर्चा की गई।

शोध प्रबंध के **द्वितीय अध्याय** में भारतीय लोककथा क्या है, तथा उसका विकास किस प्रकार हुआ और भारत के कुछ स्थानों की लोककथाओं को दर्शाया गया है।

तृतीय अध्याय में कुमाऊँनी संस्कृति क्या है, उसका विकास किस प्रकार हुआ तथा कुमाऊँ का नाम कुमाऊँ कैसे पड़ा।

चतुर्थ अध्याय में सामाजिक, आर्थिक, कलात्मक, धार्मिक, नैतिक, राजनैतिक स्थितियों को दर्शाया गया है।

पंचम अध्याय में कुमाऊँ में कितने प्रकार की लोककथाएँ हैं, तथा वह कौन – कौन सी है, उसको लोककथा सहित दर्शाया गया है।

इस शोध प्रबंध के **षष्ट अध्याय** में कुमाऊँ की लोककथाएँ जो विभिन्न प्रकार की है जैसे धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, राजनैतिक, पशु – पक्षी, परियाँ आदि की उन कथाओं का सांस्कृतिक अध्ययन किया है। कि उनमें संस्कृति कहाँ – कहाँ हैं। इसे पूर्णरुप से परिलक्षित किया गया है।

उपसंहार के अंतर्गत प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों के साथ – साथ कुमाऊँनी संस्कृति के विकास का मूल्यांकन विस्तृत रुप से किया गया है।

आभार दर्शन :

कुमाऊँ कथाओं का सांस्कृतिक अध्ययन में समग्रतया आकलन एक व्यापक प्रतिभा तथा अध्ययन पृष्ठभूमि वाले विद्वान के लिए ही संभव है। अपनी सीमित क्षमताओं और सीमाओं को ध्यान में रखते हुए यह शोध प्रबंध प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। संभवतः इस प्रयास में मैं अकिंचन भी सफल नहीं हो पाती, यदि मुझे अगाध ज्ञान राशि से परिपूर्ण हिन्दी विभाग के रीडर, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा के डॉ. ओमप्रकाश यादव का महत्वपूर्ण योगदान न मिला होता जिन्होंने इस दुष्कर कार्य को अपना मार्गदर्शन देकर सहज बनाया और परम श्रद्वेय गुरुवर डॉ. विष्णुविराट जी का पग – पग पर कुशल मार्गदर्शन, प्रोत्साहन तथा प्रेरणा प्राप्त नहीं होती। ब्रजभाषा के ज्ञाता, वेदांताचार्य, साहित्यकार, के द्वारा ही ज्ञान राशि को इस रुप में प्राप्त करके उनके प्रति किन भावों से कृतज्ञयता को व्यक्त करूँ, यह मेरे लिए अत्यंत कठिन प्रश्न है। विभाग के अन्य सभी प्राध्यापक एवं प्राध्यापिकाओं की भी मैं आभारी हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष और परोक्ष रुप से मुझे सहयोग प्रदान किया।

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के श्रीमती हंसा मेहता पुस्तकालय के समस्त अधिकारियों की भी मैं कृतज्ञ हूँ। जिन्होंने पुस्तकालय को सहज और आवश्यकतानुसार उपयोग की अनुमति प्रदान की। मैं उन समस्त विद्वानों का आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके निश्चल भावों ने सदैव मेरे हौंसले को बुलंद रखा है।

मैं आभारी हूँ, अपने पूज्य पिताश्री ईश्वरी दत्त भट्ट और माता श्रीमती सरस्वती देवी भट्ट की, जिन्होंने मेरे जीवन की विकट परिस्थितियों में मुझे अपना आत्मिक सहयोग प्रदान कर मुझे मेरे संघर्ष भरे मार्ग पर निरंतर चलते रहने के लिए प्रेरित किया।

मैं सदैव अपने पिता तुल्य भ्राताश्री बुद्धि बल्लभ भट्ट, मेरी भाभी श्रीमती नीरु भट्ट की आभारी रहूँगी मुझे अपना सहयोग दिया। जिससे मैं स्वयं को इस और अग्रसर कर सकी।

मैं अपने पति पंकजकुमार पाण्डे की सदैव ऋणी रहूँगी। जिनके प्रयास एवं प्रोत्साहन तथा महत् सहयोग से मैं अपना यह यज्ञ पूर्ण कार्य कर सकी।

अपनी निकटस्थ सखी सुश्री डॉ. पूनम सेन और सुश्री डॉ. कविता यादव का भी आभार व्यक्त करती हूँ। जिन्होंने इस शोध कार्य के लेखन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मैं आई – ट्रेड ग्राफीक्स, बड़ौदा के कमलेश परीख जी की आभारी हूँ जिन्होंने पूरे मनोयोग से इस शोध प्रबंध का टंकण कार्य पूर्ण किया। इस शोध कार्य की अपनी एक सीमा थी, हो सकता है कुछ बातों का उल्लेख न हो पाया हो किंतु फिर भी मैंने समस्त विषय पर गहन अध्ययन करने के पश्चात् मूलतः सभी अध्याय पर रोशनी डालने का प्रयास किया है। उसी दृष्टि प्रसाद के साथ –

शोध – छात्रा

(कमला पाण्डे)